

Vol 6 Issue 4 Jan 2017

ISSN No : 2249-894X

*Monthly Multidisciplinary
Research Journal*

*Review Of
Research Journal*

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Ruth Wolf University Walla, Israel
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Jie Hao University of Sydney, Australia
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	Ilie Pinteau Spiru Haret University, Romania
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V.MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....



स्वरोजगार से महिला सशक्तिकरण

महेश कुमार रचियता

व्याख्याता – राजनीतिक विज्ञान ,

डॉ. बी.आर.ए. राज. महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

प्रस्तावना –

विकासशील देशों में महिलाएँ बहुत तथा महत्वपूर्ण तथा लाभ संवाहक मानवीय घटक है। आर्थिक शक्ति में उनका योगदान 30 प्रतिशत से भी अधिक आंका गया है। इसी कारण भारतीय नियोजन के व्यापक प्रारूप में परिवार कल्याण पोषण एवं महिला तथा बच्चों के लिए शिक्षा को समन्वित करके न्यूनतम स्वस्थ सुविधाओं को प्रदान करने पर विशेष बल दिया है। महिलाओं की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार करने की दृष्टि से उन्हें विकास की मुख्य धारा में अगली सीढ़ी पर खड़ा करके तथा सामाजिक संसाधनों एवं सामग्री पर नियंत्रण करने के लिए विविध कल्याण एवं विकास सेवाओं का शुभारम्भ किया गया। विभिन्न क्षेत्रों और पहलुओं में अधिकार सम्पन्न आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। वर्ष 1987 में राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना, 73वाँ संविधान संशोधन के अंतर्गत महिलाओं का अधिकार सम्पन्न बनाने के प्रयास, पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटों का आरक्षण, राष्ट्रीय महिला नीति की घोषणा वर्ष 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित करना तथा महिला अस्मिता की सुरक्षा एवं महिला उद्यमिता के प्रोत्साहन हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाएँ इन्हीं प्रयासों के कुछ उदाहरण हैं।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुए विभिन्न अध्ययन इस तथ्य का खुलासा करते हैं कि समाज में स्त्री पुरुष असमानता कम करने से अधिक आर्थिक समृद्धि आ सकती है और गरीबी कम करने में मदद मिल सकती है। समाज में महिलाओं का दर्जा बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण उपाय स्वरोजगार है। जिससे एक तरफ वे आय अर्जित करने में समर्थ होती हैं वही उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि भी होती है जिसके फलस्वरूप वे संसाधनों पर अधिक नियंत्रण रख सकती हैं। आज के आधुनिक आर्थिक युग में महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए उनका आर्थिक विकास से तात्पर्य है कि महिलाओं की जीवन निर्वाह के लिए जिन मूलभूत आवश्यकताओं की जरूरत होती है, वे मानवीय गौरव व मूल्यों को कायम रखते हुए प्राप्त हो जिससे महिलाएँ आत्मनिर्भरता एवं सम्मान से अपना जीवन व्यतीत कर सकें।



महेश कुमार रचियता

वर्तमान में भारत में ऐसी महिलाओं की संख्या बहुत अधिक है, जिन्हें जीवन जीने के लिए बहुत ही संघर्ष करना पड़ता है। जिसमें अधिकांश रूप से उन्हें कई समस्याओं का सामना आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए करना पड़ता है। कई अध्ययनों से जानकारी मिली है कि— 'महिलाएँ कुल काम का 23 भाग काम करती हैं क्योंकि महिलाओं के कई कार्यों से प्रत्यक्ष आमदनी नहीं होती है जैसे घर के काम, बच्चों का पालन-पोषण, पारिवारिक स्वजनों की सेवा कई ऐसे अनौपचारिक कार्य महिलाएँ करती हैं, जिसका आय प्राप्त से सीधा संबंध नहीं होता।

महिलाओं के श्रम को 'आय प्राप्त' में गिना जाएँ और उन्हें आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त हो इस उद्देश्य को लेकर महिलाओं को स्वरोजगार और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। भारत में या विश्व में अन्य देशों में स्वरोजगार द्वारा जीवन या पकड़ने के लिए आमदनी या आय प्राप्त की जाती है। स्वरोजगार कार्य का अर्थ है कि स्वयं व्यवसाय मजदूरी करके या वस्तुओं को बनाकर बेचा जाए और उससे प्राप्त धन से अपना जीवन निर्वाह किया जाए, उससे नियमित आय का प्रावधान नहीं होता ऐसा अनुमान है कि भारत में नियमित रोजगार प्राप्त करने वालों में महिलाओं की संख्या केवल 6 प्रतिशत है और निर्वाह के लिए आय या आमदनी प्राप्त करने का कार्य करती हैं। (इला भट्ट 145) स्वरोजगार को तीन भागों में बांटा गया है—

1. घर पर काम करने वाली महिलाएँ — बीड़ी, अगरबत्ती बनाना, पापड़, आचार, मसाला, बनाने वाले सिलाई, बुनाई का कार्य, हस्त उद्योग को कार्य करने वाले ये सभी ऐसे कार्य हैं जिन्हें महिलाएँ घर में रहकर करती

है।

2. सड़कों एवं गलियों में फेरी लगाकर अपना समान बेचने वाली महिलाएँ – सब्जी बेचने, मनिहारी का समान बेचने वाली, चूड़ी बेचने वाली आदि।

3. वे मजदूर महिलाएँ जो विविध सेवाओं को बेचकर कार्य करने वाली महिलाएँ – कृषि कार्य, बांध बनाने का कार्य, मकान बनाने, जंगली उत्पादन को इकट्ठा करके बेचने वाले कार्य।

उपरोक्त तीनों तरह के गृह रोजगार उद्योगों के माध्यम से महिलाएँ अपने जीवन एवं परिवार की भौतिक आवश्यकताओं की सहज उपलब्धता का कार्य करती रही है। उपरोक्त स्वरोजगार लघु उद्योगों के माध्यम से अपनी जीविका यापन करने के साथ-साथ अपने परिवार के सदस्यों की भी आर्थिक आवश्यकता पूरी कर रही थी परन्तु अपने उद्यम का अपेक्षित लाभों का प्रतिशत प्राप्त करने में वे पूर्णतः सफल नहीं हो पाती हैं। इसका प्रमुख कारण वे चुनौतियाँ व समस्याएँ हैं जिनका सामना स्वरोजगार से जुड़ी महिलाओं को आये दिन करना पड़ता है। महिला उत्थान हेतु प्रतिदिन नई-नई योजनाएँ घोषित होने के बावजूद तथा महिलाओं की भागीदारी के बिना देश के समाज की सफलता असंभव मानने के बावजूद जब महिला उद्यमियों की समस्या या परेशानी की बात आती है तो आज भी वही वस्तुस्थिति देखने को मिलती है जो आज से कई दशक पहले देखने को मिलती थी। यही वजह है कि महिलाओं के आर्थिक उत्थान हेतु प्रस्तुत की गई कई योजनाओं के संचालन में इसके संचालक इसलिए हिचकिचा रहे हैं क्योंकि महिलाएँ इन योजनाओं का लाभ पूरा नहीं उठा पा रही हैं कुछ महिला उद्यमी हैं तथा उनमें से भी अधिकांश का कार्यक्षेत्र पापड़, बीड़ी निर्माण, रेडीमेड गारमेंट्स, बीड़ी अगर्बती निर्माण तक ही सीमित है। यही वजह है कि महिला उद्यमियों द्वारा प्रायः यह शिकायत रहती है कि उन्हें गम्भिरता से नहीं लिया जा रहा है। समस्त क्षमताएँ होने के बावजूद समाज के आर्थिक विकास में वह योगदान नहीं दे पा रही हैं। जितना कि अपेक्षित है। सम्भवतः इसका प्रमुख कारण हो सकता है। – महिलाओं के वे विशेष जिम्मेदारी कठिनाइयाँ जो पुरुष उद्यमी के सामने नहीं होती।

महिलाओं को स्वरोजगार के लिए प्रायः कच्चे माल की समस्या, बिजली की समस्या, मार्केट की समस्या, आदि समस्याओं के साथ-साथ अनेक अन्य समस्याओं से भी जुझना पड़ता है। महिला उद्यमियों को जिन प्रमुख अवरोधों का सामना करना पड़ता है वे प्रमुख समस्याएँ हैं –

महिलाओं की गतिशीलता पर सीमाएँ—महिला उद्यमियों पर किए गए एक शोध अध्ययन में स्वरोजगार से जुड़ी महिलाओं का सक्षात्कार लिया गया तो पाया कि महिला उद्यमी की प्रमुख समस्या कयादेश प्राप्त करने हेतु आने जाने में कठिनाई होना, कच्चा माल खरीदने हेतु दूरसे शहर या संचालक के यहां आने जाने में कठिनाई होना। निश्चित है महिला द्वारा अपना रोजगार संचालित करने से संबंधित महसूस की जाने वाली प्रमुख समस्या है। जो महिला उद्यमी इस वस्तु स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहती है वे अंततः सफल हो जाती विशेष घबराकर उद्योग व्यवसाय को छोड़कर घर बैठ जाते हैं निर्णय क्षमता का अभाव—रोजगार के क्षेत्र में सफल होने के लिए एक आवश्यक तत्व होता है उचित समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता दुर्भाग्यवश महिलाओं में इस क्षमता का बहुधा अभाव पाया जाता है। प्रमुख उस वस्तु स्थिति के जिम्मेदार है हमारी भारतीय सामाजिक व्यवस्था जिसके अंतर्गत महिलाओं का बचपन से ही अधिकांश आत्मनिर्णय लेने में स्वतंत्रता नहीं होती तथा इसी वस्तु स्थिति से उसे जीवन भर गुजरना पड़ता है। इस प्रकार उन्हें जीवन भर स्वतंत्र निर्णय लेने का मौका ही नहीं मिलता तथा स्वतंत्र रूप से निर्णय न ले पाने की उनकी क्षमता अंततः उद्यमी के रूप में उनकी रोजगार में सफलता को प्रभावित करती है।

वर्तमान व्यवसाय व्यवस्था से समझौता—भ्रष्टाचार हमारे जीवन का विशेषकर व्यवसायिक जीवन का एक ऐसा अभिन्न अंग बन चुका है कि इसे भ्रष्टाचार न कहा जाकर 'शिष्टाचार' की संज्ञा दी जाती है। इस वस्तु स्थिति में सभी महिलाएँ कार्य नहीं कर पाती तथा प्रचलित व्यवसायिक तरीके से समझौता न कर पाने के कारण इनमें से अधिकांश महिलाएँ अपना कार्य नहीं करवा पाती हैं। वैसे महिलाएँ इमानदार होती हैं। जो सदैव व्यवसाय के हित में नहीं होती हैं। इसका अंततः प्रतिकूल प्रभाव रोजगार की सफलता पर पड़ता है।

भारतीय पुरुष की दोहरी मानसिकता—अधिकांश पतियों द्वारा खड़ी की गई समस्याओं का सामना नहीं कर पाती तथा यहां आकर महिला उत्थान तथा महिला स्वतंत्रता की अधिकांश बातें धरी की धरी रह जाती हैं। वस्तु स्थिति और खराब हो जाती है जब इसमें भारतीय पुरुष की दोहरी मानसिकता आडे आने लगती है। 21वीं सदी की बात करने वाला पुरुष आज भी वही दोहरी मानसिकता लिए बैठा है। जिसमें पिस रही महिला उद्यमी। समय प्रबंधन का अभाव—भारतीय महिला चाहे कितने भी बड़े पद कार्य कर रही हो चाहे कितनी भी आधुनिक हो, चाहे कितनी भी बड़ी उद्यमी हो उसके सामने सर्वप्रमुख प्राथमिकता उसका 'घर—संसार' होता है। ऐसा इसलिए नहीं कि समाज की उससे यह अपेक्षा होती है बल्कि विशेषकर इसलिए भी क्योंकि बचपन से ही उसके मन मस्तिष्क में यह बात बैठी हुई है कि वह कितनी भी अधिकारी हो जाये यदि वह अपने बच्चों का पर्याप्त समय नहीं दे पाती अथवा बच्चों का सही लालन पालन नहीं कर पाती तो बाकी बेकार है। यह वजह है कि महिलाओं द्वारा स्थापित की गई इकाइयों में वे पर्याप्त सक्रिय ध्यान नहीं दे पाती तथा प्रायः उनके द्वारा स्थापित रोजगारकी इकाइयों अपनी स्थापित समता के 90-50 प्रतिशत तक भी नहीं चल पाती हैं।

उपरोक्त अवरोध की चर्चा का मूल उद्देश्य महिलाओं को उन परेशानियों से अवगत कराना था जो उनका स्वरोजगार व्यवसायिक जीवन में आने की संभावना है। यदि महिलाएँ इन अवरोधों को समाप्त कर उचित रणनीति के साथ स्वरोजगार के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाएंगे बल्कि उनके स्वाभिमान, गौरव व आत्मनिर्भरता में भी वृद्धि करेंगे। परिणामस्वरूप महिलाओं की कार्य क्षमता में भी बढ़ोत्तरी होगी। आज भारत दुनियाँ भर में महिलाओं द्वारा संचालित स्वरोजगार के क्षेत्र में सर्वोपरि स्थान रखता है। किन्तु हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, राजनीतिक व व्यवहारिकता व सांध्यता में अनेक चुनौतियों खड़ी होती हैं। इन चुनौतियों को कम करने में महिला संगठनों, समाजसेवी, संस्थाएँ गैर सरकारी संगठनों, सरकारी, एजेंसियों इत्यादि द्वजरा कार्य कि जा रहा है। जिसके फलस्वरूप महिला सशक्तिकरण से उनके जीवन के विधि क्षेत्रों में परिवर्तन देखने को मिल रहा है जिसके द्वारा महिलाओं के स्वयं पर निर्णय, अपने परिवार के मारे में महत्वपूर्ण निर्णयों में साझेदारी तथा घर से बाहर रोजगार संबंधी कार्यों में निर्णय की भूमिका निर्धारित करता है। इसके तहत महिलाओं में सुरक्षा की भावना, मातृत्व, मृत्यु दर में कमी इत्यादि रूप में देखा जा सकता है। सशक्तिकरण महिलाओं द्वारा अपनी खमता के दायरे में आत्म विश्वास एवं आत्मसम्मान की भावना भी शामिल होती हैं जैसे – शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, प्रशिक्षण प्रौद्योगिकीय ज्ञान में स्वरोजगार के माध्यम से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानता स्वतंत्रता व न्याय के उचित अवसर प्राप्त करके आत्मनिर्भर बनकर गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. इला यह—महिलाएँ और सर्व विकास 1994
2. दिलीप बासु – भारत में आर्थिक विकास 1986
3. पुष्पा मोतीयानी – महिला विकास की नई दिशाएँ 1998
4. आशुरानी – महिला विकास कार्यक्रम 2006
5. डॉ. सुभाष चंद्रगुप्ता – कार्यशील महिलाएँ एवं समाज 2007

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ Directory Of Research Journal Indexing
- ★ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005, Maharashtra
Contact-9595359435

E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com